प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए मुद्राशास्त्र का महत्व

इतिहास की संरचना साक्ष्य सापेक्ष होती है। "इतिहासकार अतीत की घटनाओं का स्वयं साक्षी नही होता है। अतः वह पुरावशेषो से ज्ञात तथ्यों के आधार पर इतिहास का निर्माण करता है।" इतिहास जानने के महत्वपूर्ण साक्ष्य साहित्यिक व पुरातात्विक होते है। पुरातात्विक साक्ष्य अपने अविकल रूप मे प्राप्त होने के कारण अधिक विश्वसनीय माने जाते है। पुरातात्विक साक्ष्यो के अन्तर्गत प्राचीन मुद्राओं का स्थान विशिष्ठ है। यद्यपि मुद्राओ का निर्माण अपने समय की दैनिक आवश्यकताओ की पूर्ति क्रय-विक्रय तथा लेन-देन की दृष्टि में रखते हुए किया गया था। तथापि कालान्तर मे यह इतिहास के अनेक अज्ञात एव अल्पज्ञात पक्षो को उद्घाटित करने मे सहायक सिद्ध हुआ।

मुद्राशास्त्र के अध्ययन से संबन्धित विद्वानो ने प्रारंभ मे मुद्राओ के आकार-प्रकार महत्व उन पर अंकित चिन्ह लेखों तथा धातु के अध्ययन को महत्व दिया उन्होने प्राप्त मुद्राओ तथा मुद्रानिधियों के प्राप्ति स्थान और उनके भूमिस्थ होने के समय यथेष्ट महत्व नही दिया जो अनेक दृष्टियो से उपयोगी है। अब इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि मुद्रा किस स्थान से प्राप्त हुई और किस कालखण्ड मे इसे भूमि मे निक्षिप्त किया गया। मुद्रा या मुद्रानिधि का स्तर जानना आवश्यक है क्यो कि पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त मुद्राएँ उस स्तर से प्राप्त अन्य भौतिक उपकरणों के काल

Scanned by CamScanner

निर्धारण में सहायक होती है। मुद्रा निधियाँ काल-विशेष की राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डालती है। तथा साथ ही उस समय की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक स्थिति का भी ज्ञात कराती है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए मुद्राशास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है। मुद्राशास्त्र से प्राचीन भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण पक्षों की पुष्टि होती है। जो निम्न प्रकार है —

मुद्रा शास्त्र का महत्व

1. राजनैतिक इतिहास
2. प्रशासनिक इतिहास
3. धार्मिक इतिहास
4. आर्थिक इतिहास
5. सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास
6. कला एवं साहित्य की दृष्टि से।

(1) राजनैतिक इतिहास की संरचना मे मुद्रा का महत्व :- राजनैतिक इतिहास की दृष्टि से मुद्राशास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है। उस पर अंकित प्रतीक, आकार-प्रकार, आकृतियाँ अभिलेख आदि राजनैतिक इतिहास के ज्ञान में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के अनेक अंधकार युग जिनके संबंध में साहित्य तथा अभिलेखों से कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती है। 206 ई.पू. - 300 ई. तक का भारतीय इतिहास का ज्ञान हमें मुख्यत: मुद्राओं की सहायता से ही होता है। इस दृष्टि से सर्वप्रथम

हमारा ध्यान पश्चिमोत्तर भारत में शासन करने वाले बख्त्री यवनों के इतिहास की ओर आकृष्ट होता है। इस वंश के अधिकांश शासकों का ज्ञान मुद्रा से ही होता है। इस वंश के शासकों में से केवल दो शासकों का ही उल्लेख अभिलेखों से मिलता है तथा केवल 7 शासकों की सूचना साहित्यिक स्रोतों से प्राप्त होती है। उत्तर भारत में शासन करने वाले स्थानीय एवं जनजातीय राज्यों के इतिहास पर मुख्यतः मुद्राओं से ही प्रकाश पड़ता है। यौधेय, शिवि, मालव, आदि गणों के इतिहास तथा अयोध्या, पांचाल, कौशाम्बी, मथुरा आदि के स्थानीय राजवंशों का इतिहास मुख्यतः मुद्राओं से ही उद्घाटित होता है। यौधेयों की मुद्राएँ जिस स्थान से प्राप्त हुई उन स्थलों को ध्यान में रखते हुए यौधेयों का राज्य क्षेत्र सतलज और यमुना के बीच निर्धारित किया गया। इसी प्रकार मालव गण के पंजाब से राजस्थान की ओर चित्तौड़गढ़ के समीप मध्यमिका में जाकर बस जाना मुख्यतः उनकी मुद्राओं के साक्ष्यों से ही इंगित हुआ है। मुद्राओं से राजाओं की सैनिक अभियानों की भी पुष्टि होती है। कश्मीर नरेश ललितादित्य मुक्तापीड के मुद्राओं की एक निधि उत्तर प्रदेश के बांदा जिले से प्राप्त हुई है। इतिहासकार का अनुमान सही प्रतीत होता है कि ये मुद्राएं कन्नौज के राजा यशोवर्मा के विरुद्ध उसके उस सैनिक अभियान में यहाँ पहुँची होंगी। जिसकी पुष्टि कल्हण की राजतरंगिणी से होती है। गुप्त वंशीय शासक काच एवं प्रकाशादित्य तथा अनेक अन्य प्राचीन भारतीय शासकों के इतिहास के संदर्भ में ज्ञान मुद्राओं से प्राप्त होता है।

मुद्राओं से अनेक राजनीतिक घटनाओं

का भी ज्ञान प्राप्त होता है।
D.R भण्डारकर [Ancient Indian Numesmatics 1921] तथा S.K. मैती [Early in Coins and currency system] ने मुद्राओं के आधार पर अनेक राजनैतिक महत्व की घटनाओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया है।
डिमेट्रियस द्वारा पश्चिमोत्तर भारत के विजय की पुष्टि उसकी रजत एवं ताम्र निर्मित द्विभाषी मुद्राओं से होती है।
शक-पह्लव शासक वोनोनीज, स्पलरिस एजेज प्रथम, एजिलाइसिस, गोण्डोफर्निज आदि शासकों का शासन क्रम मुद्राओं के आधार पर ही निर्धारित किया गया है। पश्चिमोत्तर भारत में शासन करने वाले कार्दमक वंशीय शासकों की वंशावली तथा तिथिक्रम मुद्राओं के आधार पर ही निर्धारित किया गया है इनकी मुद्राओं पर प्रचलित शासकों ने नाम एवं उपाधि के साथ उनके पिता की उपाधियों का अंकन है।
शक-सातवाहन संघर्ष के संदर्भ में गौतमी पुत्र शातकर्णी की नहपान पर विजय का निश्चायक प्रमाण जोगलथंभी मृदभाण्ड ही है जिनमें बहुसंख्यक मुद्राएँ गौतमीपुत्र शातकर्णी के नाम से पुनः अंकित है।
इस प्रकार मुद्राएँ प्राचीन काल के इतिहास के राजनैतिक पक्षों को उजागर करने में सहायक है / महत्वपूर्ण है।

(ii) प्रशासन एवं राज्य शास्त्र के अध्ययन की दृष्टि से मुद्राओं का महत्व :-
मुद्राएँ प्राचीन भारत

के प्रशासनिक एवं संवैधानिक इतिहास के अध्ययन के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है।

यौधेयों एवं मालवों की मुद्राओं पर "यौधेयगणस्य जयः" तथा "मालव गणस्य जयः" अंकित है जो इन राज्यों में गणतांत्रिक शासन पद्धति के प्रचलित होने की पुष्टि करता है। कतिपय मुद्राएं नगर शासन द्वारा प्रचलित दिखाई देती हैं जिससे प्रतीत होता है कि पश्चिमोत्तर भारत में कदाचित 'नगरराज्य' भी अस्तित्व में था। इस दृष्टि से 'नेगम' लेखयुक्त मुद्रायें उल्लेखनीय हैं।

शक-पह्लव शासकों की मुद्राओं पर शासक के नाम के साथ उसके पुत्र व भतीजे का नाम भी अंकित है जो उनके सह-शासन का संकेत देता है। एजेज II व गोण्डोफर्निज की मुद्राओं से इंगित होता है कि कभी-कभी उच्च प्रशासनिक अधिकारियों को भी सहशासक नियुक्त किया जाता था। उज्जैन के शक- शासकों की मुद्राओं से प्रमाणित होता है कि महाक्षत्रप पिता के साथ उसका पुत्र क्षत्रप के रूप में उसकी सहायता के लिए था। यत्र-तत्र मुद्राओं से पति- पत्नी के सह-शासन का भी संकेत मिलता है। पति-पत्नि के सहशासन का प्रमाण कश्मीर की उन मुद्राओं से मिलता है जिन पर 'दि क्षेमगुप्त' अंकित है। इसमें दि से तात्पर्य दिद्दा और क्षेमगुप्त के सहशासन का प्रमाण है बख्ती यवनों और कुषाणों की मुद्राओं पर प्रायः उन्हे 'धर्मिकस' और 'त्रातरस' कहा गया है। ये उपाधियाँ कर्तव्यपरायणता एवं प्रजावत्सलता जैसे राजत्व के आदर्शों की ओर इंगित करती है।

इस प्रकार मुद्राएं प्रशासनिक दृष्टि

से भी बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण है।

(iii) धार्मिक इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से मुद्राओं का महत्व :-

प्राचीन भारत के विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के इतिहास पर भी मुद्राओं से रोचक प्रकाश पड़ता है। आहत तथा जनजातीय मुद्राओं पर अंकित प्रतीक धार्मिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मुद्राओं पर अंकित धार्मिक महत्व के प्रतीकों से इस बात का संकेत मिलता है कि किस भौगोलिक क्षेत्र अथवा जनसमुदाय में कौन-सा धार्मिक सम्प्रदाय अधिक लोकप्रिय था। मुद्राओं पर राजाओं द्वारा अंकित की गई उपाधियाँ अधिकतर उनके धार्मिक विश्वासों को ही अभिव्यक्त करती है।

विम कडफिसेस की मुद्राओं पर अंकित 'माहेश्वर' उपाधि उसके शैव धर्मावलंबी होने की पुष्टि करता है। मुद्राओं के माध्यम से विदेशी राजवंशों के शासकों द्वारा भारतीय देवी-देवताओं की उपासना के सूचक महत्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आए है। अगाथोक्लीज की एक मुद्रा पर वासुदेव एवं संकर्षण का अंकन प्राप्त होता है।

कुषाण शासकों में कनिष्क एवं उसके उत्तराधिकारियों की मुद्राओं पर विभिन्न देशी-विदेशी धार्मिक सम्प्रदायों से संबंधित देवी-देवताओं का अंकन प्राप्त होता है। उनकी मुद्राओं पर यूनानी देव, ईरानी देव, भारतीय देव का अंकन है। कनिष्क की मुद्राओं पर बुद्ध का स्पष्ट अंकन है। इनके अतिरिक्त यूनानी, पारसीक, भारतीय देवी-देवताओं के

नाम भी मिलते हैं जो उसकी धार्मिक सहिष्णुता व उदारता का द्योतक है।

भारत पर शासन करने वाले हूणों की मुद्राओं पर शिव के वाहन नन्दी का अंकन है। जो उनके शैव धर्म के अनुयायी होने का द्योतक है।

गणराज्यों में प्रचलित देवी- देवताओं का ज्ञान भी मुद्राओं पर अंकित चिन्हों से होता है। यौधेय मुद्राओं पर कार्तिकेय का अंकन है तथा उन पर 'ब्रह्मण्य देवस्य' अथवा ब्रह्मण्यकुमारस्य लिखा हुआ मिलता है। इससे प्रमाणित होता है कि कार्तिकेय यौधेयों का आराध्य देवता थे।

गुप्तों की मुद्राओं पर अंकित विष्णु एवं लक्ष्मी से प्रमाणित होता है कि गुप्तों के उपास्य देवता विष्णु व लक्ष्मी थे। गुप्तवंशीय शासकों की मुद्राओं पर गरुड़ध्वज अथवा चक्रध्वज का अंकन भी है।

पौराणिक देवता हनुमान का अंकन चन्देल नरेश सल्लक्षण वर्मा की मुद्रा पर पहली बार मिलता है। इस प्रकार प्राचीन भारतीय इतिहास में मुद्राओं से धार्मिक अवस्था व प्रचलित धर्म की जानकारी प्राप्त होती है।

IV. आर्थिक इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से मुद्रा का महत्व :-

मुद्राओं की उत्पत्ति मूलतः आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु हुई। अतः मुद्राओं से आर्थिक इतिहास के बारे में जानकारी मिलना स्वाभाविक है। लक्ष्मीकांत त्रिपाठी (Coins are source of economic History) ने इस तथ्य का

Scanned by CamScanner

कि विस्तृत विवेचन किया है कि मुद्राओं की धातु उनका आकार, उनकी तौल उन पर अंकित प्रतीक उसके मुद्रित स्थल आदि आर्थिक इतिहास पर प्रकाश डालते हैं।

(राम शरण शर्मा (Coins and Problems of Early Indian History (1)) ने कुषाण स्वर्ण मुद्राओं की आकस्मिक रूप से अधिक संख्या को देखते हुए विचार व्यक्त किया है कि इन मुद्राओं के निर्माण के लिए स्वर्ण की मुख्य स्रोत रोमन मुद्राएं थी। जिन्हें गलाकर कुषाण स्वर्ण मुद्राएं निर्मित हुई। उनका यह विचार इसलिए प्रतीत होता है क्योंकि रोमन मुद्रा निधि द. भारत की तुलना में उ. भारत में बहुत अल्प मात्रा में प्राप्त हुई है। कुषाण मुद्राओं की एक निधि अबीसीनिया से भी प्राप्त हुई है। जो कुषाण कालीन भारत व अबीसीनिया के बीच व्यापारिक संबंध की पुष्टि करता है उसी प्रकार द. भारत के स्थानों से प्राप्त रोम मुद्रा निधियों से भारत व रोम के बीच घनिष्ठ व्यापारिक संबंध को प्रकट करता है।

गुप्तवंशीय सम्राटों में समुद्रगुप्त एवं चन्द्रगुप्त II की शुद्ध स्व. निर्मित विविध प्रकार की मुद्राएं गुप्त शासनान्तर्गत व्यापार, आर्थिक समृद्धि को प्रकट करती हैं। जिसका संकेत इन शासकों के अभिलेखों में भी मिलता है यह समृद्धि समुद्रगुप्त की दक्षिणापथ अभियान व चन्द्रगुप्त II के गुजरात अभियान का परिणाम थी।

Scanned by CamScanner

Date / /

(5) सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से मुद्रा का महत्व :-

~~एवं सांस्कृतिक~~ मुद्राओं से सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन में भी सहायता मिलती है। मुद्राओं पर अंकित माठरी पुत्र, भारद्वाजी पुत्र आदि उपाधियाँ इस बात का संकेत करती है कि कुछ लोगों में विवाह के उपरांत भी वधू का गोत्र परिवर्तित नहीं होता है। सातवाहन अभिलेखों में उत्कीर्ण गौतमीपुत्र वशिष्ठीपुत्र आदि उपाधियाँ भी इस तथ्य की पुष्टि करती है। मुद्राओं से समकालीन समाज में प्रचलित वस्त्र, आभूषण, मनोरंजन के साधनों के विषय में भी पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। K.M. श्रीवालिकर (Coinsage and Culture Life) में वख्त्री यवन, कुषाण, गुप्त मुद्राओं के आधार पर प्राचीन भारत के सांस्कृतिक जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है। तथा समाज में प्रचलित वस्त्र आभूषण, केश सज्जा, गृह सज्जा के उपकरण, उष्णीष, कवच, रथ, उपानह आदि के प्रकारों का विस्तृत विवेचन किया है।

गुप्त मुद्राओं से तात्कालीन शासकों के आखेट प्रियता व उनके संगीत प्रेम पर प्रकाश पड़ता है। तथा साथ ही शासकों के दाम्पत्य जीवन के चित्र भी अंकित है। गुप्त मुद्राओं पर शासकों को विभिन्न प्रकार के वस्त्र धारण करते हुए भी प्रदर्शित किया गया है। प्रारम्भिक गुप्त शासकों की मुद्रा पर अंकित वेश-भूषा कुषाण प्रभाव

Scanned by CamScanner

1st Choice

को दर्शाती है। उन्हे कोट, पतलून और टोपी पहने दिखाया गया है। इसका कारण कुछ मुद्राओं के पृष्ठभाग पर अंकित अधिकांश देवी को भारतीय वेशभूषा में बताया गया है जो विदेशी प्रभाव से मुक्त व भारतीयकरण की बढ़ती हुई प्रवृत्ति का संकेत है।

इस प्रकार मुद्राओं से तात्कालिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन में सहायता मिलती है।

(6) कला व साहित्य के अध्ययन के स्रोत के रूप मे मुद्रा का महत्व :- प्राचीन मुद्राएं कला एवं प्रतिमा लक्षण के अध्ययन की दिशा मे भी सहायक है विमकैडफिसेस की मुद्राओं पर ही सर्वप्रथम नन्दी के साथ शिव का स्पष्ट अंकन मिलता है। इस मुद्रा पर अंकित शिव प्रतिमा लक्षण/प्रतिमा विज्ञान के अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी है।

कनिष्क I की मुद्राओं पर बुद्ध का अंकन बुद्ध प्रतिमा की उत्पत्ति व विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। कनिष्क व हुविष्क की मुद्राओं पर विभिन्न देवी देवताओं के अंकन मिलते है। जिनका अध्ययन प्राचीन भारतीय कला एवं मूर्तिशास्त्र के अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

मुद्राओं से समकालीन भाषा लिपि और साहित्य पर भी किंचित प्रकाश पड़ता है। अनेक ऐसी मुद्राएं हैं जो अभिलिखित हैं इन से समकालीन भाषा व लिपि का

Scanned by CamScanner

Page No.
Date / /

मान के साथ-साथ शासकों की साहित्यिक अभिरुचि के साथ-साथ शासकों की साहित्यिक अभिरुचि के बारे में भी जानकारी मिलती है। सातवाहन मुद्राओ पर प्राकृत भाषा का प्रयोग तत्कालिन समाज में लोकप्रिय भाषा का द्योतक है। गुप्त की मुद्राओं में संस्कृत भाषा का अंकन उसकी लोकप्रियता दर्शाती है।

अतः इस प्रकार मुद्रा समकालीन भाषा, साहित्य, पर प्रकाश डालती है।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन में मुद्रा शास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है मुद्रा शास्त्र के अध्ययन से प्राचीन भारत के महत्वपूर्ण पक्षो पर प्रकाश पड़ता है।

Scanned by CamScanner